ISSN:2583-8849



दशरथ कुमार सोलंकी
जोधपुर, राजस्थान

गाँव में है

तुम जो पेड़ पत्ती फूल लिखते हो , गांव में है
तुम जो माथे की धूल लिखते हो , गांव में है

तुम जो लिखते हो तीज-त्यौहार , गांव में हैं
सम्बन्धों का स्नेह-संसार , गांव में है

गौरैया भी पुराने घर की देहरी में , गांव में है
दोस्त भी चौहटे वाली सेरी में , गांव में है

लूर में लाम-झूम गोरी , गांव में है
गेरियों की मस्तीखोरी , गांव में है

चूल्हा जो रह गया बिन जला , गांव में है
हड्डियां जो मजदूर रहा गला , गांव में है

शांति के सारे जन्तर ,गांव में हैं
क्रांति के बीज मन्तर भी , गांव में है

तुम्हारे आखरों से उठती आग , गांव में है
खेत खलिहान बाग तड़ाग , गांव में है

एक दूजे संग हिलमिल लोग , गांव में हैं
बचा जो कुछ आदरजोग , गांव में है

झोपड़ी की चूती छत , गांव में है
अभावों में पलता सत , गांव में है

तेरे शब्दों का छपरा भी , गाँव में है
कविता का ककहरा भी , गांव में है

मोड़ दो अपने पाँव कवि
लौट चलो फिर गाँव कवि
उस पीपल की छाँव कवि

छूट गया जो गाँव कवि
कैसे लिख सकोगे कविता..